समयसार, १३ वीं गाथा, उसका नौ तत्त्व का अधिकार तो आ गया। पर्याय में नौ तत्त्व का भेद है, उसे जानना परन्तु वह आदरणीय नहीं है। आहाहा! एकरूप ज्ञायक चैतन्य.... आ गया है ऊपर! एकरूप से प्रकाशमान आत्मा, अन्तर में ध्रुव ज्ञायक... प्रमाण का विषय तो द्रव्य और पर्याय है परन्तु यहाँ तो निश्चय का विषय जो त्रिकाल.... प्रमाण पूज्य नहीं है — ऐसा कहा है, क्योंकि उसमें पर्याय का निषेध नहीं आता। आहाहा! नयचक्र में है। आहाहा! पर्याय का निषेध होकर, अन्दर चैतन्य चमत्कार प्रभु पूर्णानन्द प्रभु का आश्रय लेना, एकरूप की दृष्टि करना, तब आत्मा जैसा है, वैसा प्रकाशमान श्रद्धा और ज्ञान में होता है। एकरूप त्रिकाली जो स्वरूप है, उसकी दृष्टि देने से एकरूप प्रकाशमान होता है, उसका नाम अनुभूति और सम्यग्दर्शन है। आहाहा!

पीछे कहा कि प्रमाणज्ञान, पर्याय और द्रव्य को सिद्ध करने को, सिद्ध करने को दो का अस्तित्व सिद्ध करने को प्रमाण का विषय बताया परन्तु वह प्रमाण विकल्प है। आहाहा! मैं जाननेवाला प्रमाता और ज्ञान प्रमाण और प्रमेय — ऐसा भेद है, वह भी विकल्प है — राग है; उसे छोड़कर अकेले जाननेवाला ज्ञायक दृष्टि में प्रकाशमान हो, तब एकरूप की प्रतीति हो, तब (उस) प्रतीति को सम्यग्दर्शन कहते हैं। आहाहा! यह प्रमाण का विषय चल गया है।

नय.... आज नय चलेगा। सूक्ष्म विषय है भाई! आहा...! **नय दो प्रकार के हैं....** प्रमाण दो प्रकार का कहा था, वह प्रत्यक्ष और परोक्ष। यहाँ नय दो प्रकार के (हैं)। नय का अर्थ क्या? जो ज्ञानपर्याय में श्रुतज्ञानरूपी भावप्रमाण है, वह अवयवी है और उसका-नय का एक भाग अवयव है। आहाहा! स्वरूपसन्मुख का लक्ष्य करके जो निश्चयनय है, वह यहाँ विकल्पात्मक लेना है, यहाँ रागसहित का नय है। नय का लक्ष्य विकल्पसहित और व्यवहारनय है, वह वर्तमान पर्याय और राग को जाननेवाला वह भी रागसहित-विकल्पसहित है। आहाहा!

नय दो प्रकार के हैं — द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक.... जो ज्ञान का अंश त्रिकाली द्रव्य के प्रयोजन से द्रव्य की दृष्टि करता है, उस ज्ञान के अंश को द्रव्यार्थिकनय कहते हैं। द्रव्य जिसका प्रयोजन-ऐसा जो ज्ञान, (वह) द्रव्यार्थिकनय है। जिस ज्ञान का प्रयोजन द्रव्य, जो त्रिकाली है, उसे जानना है, उस नय को द्रव्यार्थिकनय कहते हैं। अब यह पहलू सुना ही न हो... आहाहा! अभी तो...

श्रोता : शुद्धनय किसे कहते हैं?

पूज्य गुरुदेवश्री : वही कहते हैं, अभी तो शुद्धनय, यह तो द्रव्यार्थिकनय को शुद्ध, परन्तु यहाँ विकल्पात्मक बात है, क्योंकि एक त्रिकाली ज्ञायक मैं हूँ — ऐसा द्रव्य का प्रयोजन जिस नय का है, उस नय को द्रव्यार्थिक कहते हैं। यह शुद्धनय का विषय उसे कहते हैं परन्तु यहाँ विकल्पात्मक, अभी विचार में सिद्ध करने को यह द्रव्यार्थिकनय आया है। वस्तु त्रिकाल है, उसकी सिद्धि करने में अन्यमती कहते हैं, उससे (भिन्न) सर्वज्ञ जो कहते हैं, उस चीज का निर्णय करने में द्रव्यार्थिकनय का विकल्पात्मकभाव पहले आता है। आहाहा! समझ में आया?

सूक्ष्म विषय है भाई! अनन्त काल में कभी अनुभूति क्या चीज है और सम्यग्दर्शन क्या चीज है और उसका विषय क्या है, यह ख्याल में कभी लिया ही नहीं। ऐसे तो क्रियाकाण्ड बहुत किये — व्रत, तप, भक्ति, पूजा, और शास्त्र का ज्ञान भी बहुत किया। आहाहा! परन्तु यह वस्तु जो त्रिकाल है, उसको जो ज्ञान जानता है, उसको यहाँ द्रव्यार्थिक-द्रव्य जिसका, त्रिकाली चीज जिसका जानने का प्रयोजन है, उस नय के अंश को द्रव्यार्थिकनय कहते हैं। पण्डितजी! गुप्त बात है भाई! अरे! इसने कभी ध्यान नहीं दिया। आहाहा!

द्रव्यश्रावकपना भी अनन्त बार हुआ। जैसे द्रव्यलिंगी साधु अनन्त बार हुआ, वैसे आत्मज्ञान बिना द्रव्यश्रावक-बारह व्रत, और भक्ति, पूजा और श्रावक के जो छह प्रकार के आचार कहते हैं न, देव पूजा, गुरु सेवा, वह भी अनन्त बार किये परन्तु वह वस्तु-अन्दर त्रिकाल आनन्द का नाथ प्रभु — उसकी महिमा लाकर अन्तर में नहीं गया, बाहर का बाहर भटक गया। आहाहा! समझ में आया? वस्तु ऐसी है भाई!

यह द्रव्यार्थिकनय; और पर्यायार्थिक (नय) — जो ज्ञान का भाग, वर्तमान अवस्था का जानने का प्रयोजन उस नय को पर्यायार्थिकनय कहते हैं। है? **यहाँ द्रव्य पर्यायस्वरूप वस्तु में....** वस्तु जो आत्मा है, वह तो त्रिकाल द्रव्य भी है और वर्तमान पर्याय भी है, दो है। **द्रव्य पर्यायस्वरूप वस्तु में....** आहाहा! भगवान आत्मा, द्रव्य और पर्यायस्वरूप वस्तु है। वह अकेला द्रव्य ही है, और पर्याय नहीं — ऐसा नहीं तथा पर्याय अकेली है और द्रव्य नहीं — वस्तु ऐसी नहीं है। **द्रव्य और पर्यायस्वरूप वस्तु में....** वस्तु ऐसी है। आहाहा! **द्रव्य का मुख्यता से अनुभव कराये....** ज्ञान करावे.... यहाँ अनुभव कराने का अर्थ ज्ञान कराये ऐसा लेना। अनुभव करावे यह अभी इसे कहना क्या? यह तो अभी विकल्पात्मक है। क्या कहा? कि जो ज्ञान का अंश, श्रुतज्ञान प्रमाण है, उसका अंश नय जो मुख्यरूप से द्रव्य का ज्ञान कराता है, उसका नाम द्रव्यार्थिकनय कहा जाता है। अब ऐसी बातें।

श्रोता : यह तो पण्डित हो वह समझे।

पूज्य गुरुदेवश्री : पण्डित नहीं, यह तो आत्मार्थी हो वह समझे। पण्डित भी नहीं समझे। यह तो कहा नहीं? कल कहा था — श्रीमद् का (वाक्य है)।

सब शास्त्रन के नय धारि हिये, मत मण्डन-खण्डन भेद लिये,
यह साधन बार अनन्त कियो, तदपि कछु हाथ हजू न पड्यौ॥

आहाहा! शास्त्रज्ञान-वाद करके खण्डन-मण्डन किया, ऐसा है और ऐसा नहीं है और.... ऐसे विकल्प से ऐसा ज्ञान किया। आहाहा! समझ में आया? 'सब शास्त्रन के नय धारि हिये, मत मण्डन-खण्डन भेद लिये; यह साधन बार अनन्त कियो, तदपि कछु हाथ हजू न पड्यौ॥' कुछ हाथ नहीं पड़ा परन्तु वस्तु क्या है, यह दृष्टि में नहीं लिया। आहाहा!

यह यहाँ कहते हैं कि द्रव्य, वस्तु-द्रव्य अर्थात् वस्तु, हाँ! यहाँ तुम्हारे पैसे की बात नहीं है। वह वस्तु है, वह अनन्त परमाणु की बात है। यहाँ तो एक-एक द्रव्य भिन्न है, उसकी बात है। पैसा है, वह तो अनन्त परमाणु-अनन्त द्रव्य से इकट्ठा (स्कन्ध) हुआ उसका नोट या रुपया वह तो अनन्त परमाणु-अनन्त द्रव्य इकट्ठा हुआ देखने में आता है, एक द्रव्य नहीं। नोट — दस हजार के नोट होते हैं न अभी तो, बहुत होते हैं, नोट आते हैं दस-दस हजार के परन्तु वे उस कागज में तो अनन्त रजकण हैं। एक ही द्रव्य नहीं है, उसमें तो अनन्त द्रव्य है, जड़ का-अजीव का-परमाणु का-अजीव का अनन्त द्रव्य है।

यहाँ तो आत्मा-द्रव्य किसे कहते हैं? कि शरीर से, राग से भिन्न और एक समय की पर्याय से भी भिन्न — ऐसी जो त्रिकाली चीज है, उसे यहाँ द्रव्य कहते हैं। अरे! दो प्रकार के द्रव्य हैं — एक प्रमाण का द्रव्य है, एक निश्चयनय का द्रव्य है। प्रमाण का द्रव्य उसे कहते हैं कि जो त्रिकाली द्रव्य और वर्तमान पर्याय दो को जाने, वह प्रमाण का द्रव्य और निश्चयनय का द्रव्य, पर्याय से रहित त्रिकाली अकेला ज्ञायकभाव वह पर्याय से रहित नय का द्रव्य है। ए...ई... भाई! मार्ग बहुत सूक्ष्म है, भाई! अरेरे! यह मार्ग लिये बिना यह चौरासी की घानी अवतार (कर-करके) पिलकर मर गया। आहा! समझ में आया? जैसे घानी में तिल पिलते हैं तिल, वैसे अनादि से राग-द्वेष की अग्नि में पिलते-पिलते कहीं इसे शान्ति नहीं, कहीं शान्ति नहीं मिलती। शान्ति का सागर तो भगवान आत्मा (है)। उसका द्रव्य की मुख्यता से विकल्प से ज्ञान करना, वह द्रव्यार्थिकनय का विषय कहा जाता है। अभी विकल्प-राग है। आहाहा! प्रथम भूमिका में भगवान द्वारा कथित द्रव्य और भगवान द्वारा कथित पर्याय को साबित करने के लिये द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक विकल्पात्मक नय पहले आते हैं। ध्यान रखे तो समझ में आये — ऐसा है, बापू! यह कोई वार्ता नहीं। आहाहा! यह तो भगवान की भागवत् कथा है। आहाहा!

कहते हैं कि द्रव्य की जिसे मुख्यता है — मुख्यरूप से.... पर्याय है, परन्तु पर्याय वहाँ गौण है। जो त्रिकाली वस्तु का लक्ष्य करावे, अनुभव करावे.... अनुभव शब्द (से यहाँ) ज्ञान (समझना)। इस द्रव्यार्थिकनय की मुख्यता से अनुभव करावे

अर्थात् वेदन करावे यह बात यहाँ नहीं है। समझ में आया? अनुभव अर्थात् द्रव्य का जो नय है, वह त्रिकाली की मुख्यता से द्रव्य का ज्ञान करावे, उसे द्रव्यार्थिक कहते हैं। पाटनीजी! ऐसी बातें हैं। बापू! आहाहा! **और पर्याय का मुख्यता से अनुभव कराये....** अनुभव शब्द से यहाँ जानना। वेदन-अनुभूति वह नहीं। समझ में आया? आहाहा! पर्याय अर्थात् वर्तमान अवस्था, उसकी मुख्यता से ज्ञान कराये **सो पर्यायार्थिकनय है। यह दोनों नय द्रव्य और पर्याय का.....** द्रव्य त्रिकाली और पर्याय वर्तमान अवस्था, दोनों का। **पर्याय से** (अर्थात्) **(भेद से)** भेद से **(क्रम से)....** जानने पर **अनुभव करने पर तो भूतार्थ है,....** यह विकल्पात्मक ज्ञान यथार्थ है, है इतना। सत्य है या सम्यग्ज्ञान है, यह कोई बात यहाँ नहीं है।

गाथा ठीक ऐसी आ गयी है (अलौकिक!) है? आहाहा! परमानन्द प्रभु ध्रुवद्रव्य की मुख्यता से ज्ञान करावे, वह ज्ञान द्रव्यार्थिक और जो पर्याय की मुख्यता से ज्ञान करावे, वह पर्यायार्थिकनय (है)। आहाहा! इन दो के भेद से, भेद हुआ न? प्रकार हुआ न? क्रम हुआ न? द्रव्यार्थिक को जानना, फिर पर्यायार्थिक को जानना — ऐसा क्रम हुआ और द्रव्यार्थिक से जानना, पर्यायार्थिक से जानना — ऐसा भेद हुआ। आहाहा! **भेद से अनुभव करने पर तो भूतार्थ है....** है अवश्य। ये विकल्पात्मक ज्ञान द्रव्यार्थिक का और पर्यायार्थिक का है अवश्य। भूतार्थ अर्थात् त्रिकाली चीज है, यह बात यहाँ नहीं कहना है। यह द्रव्य का ज्ञान और पर्याय का ज्ञान विकल्पात्मक है, है, आहाहा! है? **सत्यार्थ हैं;....** यह द्रव्य का ज्ञान और पर्याय का ज्ञान है, सच्चा ज्ञान है — ऐसी बात यहाँ नहीं करना है परन्तु यह है। (ऐसी बात है)। समझ में आया? यहाँ सच्चा ज्ञान है, वह सम्यक् (ज्ञान है), यह बात नहीं कहना है। यहाँ तो द्रव्यार्थिक का लक्ष्य करके जो ज्ञान हुआ और पर्यायार्थिक (का लक्ष्य करके जो ज्ञान हुआ), वह है! बस इतना! इस भूतार्थ का अर्थ इतना है। आहाहा!

श्रोता : सविकल्प सम्यग्दर्शन।

पूज्य गुरुदेवश्री : सम्यक् नहीं; सविकल्प सम्यक् नहीं; सविकल्प ज्ञान की पर्याय है।

श्रोता : निर्णय तो यथार्थ है न?

पूज्य गुरुदेवश्री : यथार्थ निर्णय.... परन्तु अभी विकल्पात्मक है। सम्यक्ज्ञान नहीं, सम्यग्दर्शन नहीं। आहाहा!

श्रोता : व्यवहार सम्यग्दर्शन कहलायेगा।

पूज्य गुरुदेवश्री : जरा भी नहीं। यह तो आँगन में खड़े होकर जैसे जवेरी की दुकान में क्या-क्या जवाहरात है। यह जानते हैं, वह आँगन में खड़ा है, अन्दर नहीं गया है। वैसे भगवान आत्मा त्रिकाली द्रव्य और वर्तमान पर्याय दो का विकल्प से ज्ञान करते हैं। वस्तु की सिद्धि / साबित करने को... अनुभव करने को नहीं... वह बाद में। आहाहा! ऐसी बातें अब! और यह समझे बिना इसे धर्म हो जाये... और प्रतिमा ले लो, व्रत ले लो... क्या व्रत और क्या प्रतिमा? आहाहा!

अभी तो द्रव्य और पर्याय की मुख्यता से ज्ञान करावे वह भी विकल्पात्मक ज्ञान है, बस इतना! सम्यग्दर्शन है और सम्यक्ज्ञान है यह बात यहाँ नहीं है। ज्ञानचन्दजी! आहाहा!

श्रोता : यह ज्ञान, मिथ्यादृष्टि हो तब हो जाता है?

समाधान : हाँ, यह मिथ्यादृष्टिपने में द्रव्य और पर्याय कैसे हैं? ऐसा ज्ञान करते हैं, इतना! सम्यक्ज्ञान नहीं। आहाहा!

पीछे **और द्रव्य और पर्याय दोनों से अनालिंगित....** आहाहा! द्रव्य और पर्याय के भेद को जो स्पर्शता नहीं, **(आलिंगन नहीं किया हुआ) शुद्ध वस्तुमात्र जीव के....** आहाहा! इस भेद को आलिंगन नहीं करता। द्रव्यार्थिकनय से द्रव्य का ज्ञान और पर्यायार्थिकनय से पर्याय का ज्ञान, यह भेदरूप ज्ञान कहो, वह आलिंगन नहीं करता, ऐसा। पण्डितजी! विषय तो यहाँ बहुत अच्छा है! आहाहा! है? **द्रव्य तथा पर्याय दोनों से....** भेद से **अनालिंगित (आलिंगन नहीं किया हुआ) शुद्धवस्तुमात्र जीव....** अकेला शुद्ध चैतन्यमूर्ति भगवान **(चैतन्यमात्र) स्वभाव का अनुभव करने पर....** यह अनुभव वेदन है। पहले अनुभव था, वह ज्ञान था। समझ में आया? पाटनीजी! पुस्तक है या नहीं? है, ठीक। यह सब पण्डित हैं न सामने।

पहले जो द्रव्यार्थिक का अनुभव कहा था, वह तो ज्ञान करना — इतनी बात है। अनुभव अर्थात् आनन्द का वेदन है, वह नहीं। पर्यायार्थिकनय की मुख्यता से ज्ञान कराया

था, वह ज्ञान उस प्रकार का विकल्पात्मक ज्ञान अस्ति है, बस इतना! परन्तु जब आत्मा का अनुभव करते हैं। आहाहा! यह है, देखो! **आलिंगन** — भेद को द्रव्य और पर्याय का ज्ञान का भेद को विकल्पात्मक को आलिंगन, स्पर्श-छुए बिना.... आहाहा! **शुद्ध वस्तुमात्र जीव....** वह तो अशुद्ध का विकल्प नयात्मक ज्ञान अशुद्ध था। आहाहा! **शुद्ध जीव वस्तुमात्र का....** जीव के स्वभाव का अनुभव, देखो! **शुद्ध वस्तुमात्र के, जीव के स्वभाव का अनुभव....** त्रिकाली ज्ञायकभाव, आनन्दभाव, शान्तभाव, वीतरागभाव का अनुभव करने पर — उसका वेदन करने पर **वे अभूतार्थ हैं,....** द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक का जो ज्ञान किया था, वह झूठा है। समझ में आया? आहाहा! ऐसी बात है। वीतरागमार्ग, परमेश्वर जिनेश्वरदेव का पंथ समझना, (उसके लिए) बहुत पुरुषार्थ चाहिए, बहुत अन्दर में से निवृत्ति चाहिए। अन्दर में से कहा (है), बाहर की (बात नहीं है)। आहाहा!

भगवान अमृतचन्द्राचार्य सन्त.... नव तत्त्व की बात तो कुन्दकुन्दाचार्य ने पाठ में कही कि उससे भिन्न भगवान एकाकार है, तो अमृतचन्द्राचार्य ने प्रमाण, नय, निक्षेप उसमें से निकाला। समझ में आया? प्रमाण और नय के भेद से ज्ञान करना, वह एक प्रकार से है। है, माया है — ऐसा जो अन्य कहते हैं न — अन्यमति कहते हैं वह, माया है सब, पर्याय और राग वह सब माया है। मा... या अर्थात् माया, या.... मा, या... मा.... या — वह मा — नहीं — ऐसा कहते हैं। हमें तो वेदान्त का पता है न? हमारी दुकान में जब हम थे, तब हमारा एक ग्राहक था, उस समय एक ब्राह्मण था बहुत वेदान्ती था, हमारा ग्राहक था। ग्राहक समझते हैं? धारधीर करते थे तो ये हमारी दुकान है तो माल लेने को आते थे। हम उगाही (करने) उसके घर जाते थे तो — सेठ पधारो, सेठ पधारो! उस समय तो हमारी उम्र छोटी थी न, १७-१८ वर्ष की। (वह) कहता बैठो। बहुत वेदान्ती था, एक व्यापक है न, तो साथ में एक दर्जी का मकान था, तो वहाँ आवे तो सब पैर पड़ते। हम तो समझते थे कि यह, क्या वेदान्त और क्या पर्याय नहीं और अकेला वेदान्त, एक व्यापक, सर्व व्यापक एक ही चीज है परन्तु सर्व व्यापक एक है — ऐसा माना किसने? माने किसे (कौन)? पर्याय माने या ध्रुव माने? (पर्याय)। तो ध्रुव और पर्याय दो हो गये, द्वैत हुआ, अद्वैत नहीं रहा। बड़ी चर्चा होती थी।

हमारे भाई हैं न मोतीलालजी ब्रह्मचारी। राजकोट में परमहंस था। हमारे व्याख्यान में सब आते थे परन्तु फिर वह परमहंस हो गया, रेलवे का अधिकारी था, वेतन बहुत था तो फिर बाद में यहाँ आया था और फिर वहाँ राजकोट में आया था। राजकोट में चर्चा भी बहुत हुई परमहंस हो गया। बस एक ही व्यापक (ऐसा कहता था)। (हमने कहा) अरे! परन्तु एक व्यापक कहा तो सुनो! एक व्यापक नहीं माना — ऐसी कोई दशा है या नहीं? तो तुम एक मानने का प्रयत्न कराते हो न? है? और एक अनेक मानने की जो पर्याय है, वह मान्यता है, वह अस्ति है या नहीं? माया है? या.... मा है ही नहीं, यह यहाँ बताते हैं। समझ में आया?

द्रव्यार्थिक का लक्ष्य करके ज्ञान, पर्यायार्थिक का लक्ष्य करके ज्ञान, विकल्पात्मक भी है, वह सम्यग्ज्ञान है — ऐसी यहाँ अभी बात नहीं है। है, अस्ति है न अस्ति? इतना! तो फिर बहुत चर्चा होती थी। ऐसा स्वीकार तो किया। मैंने कहा भाई! एक (बात सुनो) कि वेदान्त तो ऐसा कहते हैं कि आत्यन्तिक दुःख से मुक्त हो तो दुःख है, है तो आत्मा आनन्द है और दुःख है — वस्तु ही हो गयीं, द्वैत (हो गया)। तुम्हारा अद्वैत नहीं रहा; और दूसरी, दुःख से मुक्त होओ, तो इसके स्थान में यह आनन्ददशा आती है तो आनन्ददशा और वस्तु त्रिकाली दो हो गये। युगलजी! भाई! ऐसी बात नहीं चलती।

यहाँ तो सत्य क्या है, कसौटी पर चढ़ाकर निर्णय लेना, वह चीज है। आहाहा! सोने को भी कस-कसौटी में चढ़ाते हैं या नहीं कि यह पन्द्रहवान है, सोलहवान है, तेरहवान है — ऐसा; वैसे भगवान आत्मा सर्वज्ञ परमात्मा ने जैसा कहा, वैसा नय से निर्णय करके कसौटी से जैसे स्वर्ण का निर्णय करते हैं, वैसे नय से आत्मा का-द्रव्य और पर्याय का निर्णय करके — विकल्पात्मक निर्णय... आहाहा! प्रियंकरजी! इसमें तो सब पण्डिताई उड़ जाती है। द्रव्य और पर्यायार्थिकनय से जो ज्ञान हुआ, उसे अभूतार्थ कहते हैं। आहाहा!

श्रोता : क्यों?

पूज्य गुरुदेवश्री : क्योंकि वह तो विकल्पात्मक भाव है। उसमें शुद्ध वस्तु का अनुभव नहीं आया। आहाहा! गाथा तो आयी है बराबर इसमें — शिक्षण-शिबिर में! मार्ग तो ऐसा है भाई! आहाहा!

शुद्ध वस्तु का, वस्तुमात्र जीव, शुद्ध वस्तुमात्र जीव! राग नहीं, पर्यायमात्र का लक्ष्य नहीं, **शुद्धवस्तुमात्र जीव के (चैतन्यमात्र) स्वभाव का अनुभव करने पर....** आहाहा! त्रिकाली आनन्दस्वरूप भगवान, त्रिकाली ज्ञानस्वरूप भगवान.... यह भगवान आत्मा की बात है, हाँ! भगवान, भगवान के पास रहे। त्रिकाली ज्ञानस्वरूप भगवान, त्रिकाली आनन्दस्वरूप भगवान का अनुभव करने पर उस तरफ लगकर पर्याय को वहाँ जोड़कर, और वेदन में-अनुभव करने पर वह द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिक का जो ज्ञान विकल्पात्मक था, वह झूठा है। अनुभव करने पर झूठा है। पाटनीजी! आहाहा!

श्रोता : गुरुगम के बिना सब व्यर्थ है, गुरुगम के बिना पता नहीं लगता।

पूज्य गुरुदेवश्री : वस्तु ऐसी है, भाई! वस्तु ऐसी है। आहाहा! दूसरा ज्ञान तो एक ओर रहो, परन्तु द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिक के भेद से ज्ञान करते हैं, वह भी है अवश्य परन्तु अनुभव करने पर वह झूठा है। आहाहा! समझ में आया?

सम्यग्दर्शन होने में.... त्रिकाली का अनुभव करने से सम्यग्दर्शन होता है। यह द्रव्यार्थिक का और पर्यायार्थिक का जो ज्ञान हुआ, उसे वह सम्यग्दर्शन है, यह नहीं। आहाहा! ऐसी बात है भाई! स्वभाव का अनुभव करने पर वे अभूतार्थ हैं, झूठे हैं, कौन? वह द्रव्यार्थिकनय से विकल्पात्मक ज्ञान किया और पर्यायार्थिक से पर्यायार्थिक को साबित किया, वह सब अनुभव करने पर भेद सब झूठा है। आहाहा! कहो बंडीजी! यह ऐसी बात है। आहा! यह नय की व्याख्या हुई। पहले प्रमाण की, उससे पहले नव तत्त्व की (बात हुई) अब एक निक्षेप की (बात) रही।

निक्षेप, ज्ञेय का भेद है; नय, ज्ञान का भेद-भाग है। निक्षेप, ज्ञेय का भेद है। समझ में आया? आहाहा! निक्षेप, वह विषय है और नय विषय करनेवाला है। नय विषयी है और निक्षेप विषय है। इस नय-निक्षेप विषय के चार भेद हैं। आहाहा! कहा था न, नहीं? कल कहा था। वह एक सेठ था न, उसने ऐसा कहा था कि मिथ्यादृष्टि हो, तब तक भगवान की प्रतिमा के ऊपर लक्ष्य जाता है और तब तक माने — ऐसा कहा था। सेठ था गृहस्थ। तब तो सारे काठियावाड़ में उसके पास पैसा था, वैसा पैसा (किसी के पास नहीं था)। ६०-७० वर्ष पहले दस लाख रुपये और चालीस हजार की आमदनी तथा दस हजार का

एक गाँव, ग्राहक पूरा गाँव ग्राहक, वह बड़ा अमलदार अधिकारी और अमरेली का जज उसके पास जाते थे। ऐसी उसकी बाहर में बड़ी छाप थी। तो वह कहता था — स्थानकवासी था — तो वह कहता था कि मूर्ति तो जब तक मिथ्यात्व है, तब तक मानी। मैंने कहा सुनो! कहा — जो निक्षेप है, वह नय का विषय है और जब नय उत्पन्न होता है, वह प्रमाणज्ञान हुआ। जिसको सम्यग्ज्ञान हुआ, उसे नय के भेद पड़ते हैं और नय के भेद पड़ते हैं, वह निक्षेप के भेद को विषय करते हैं। न्याय समझ में आया? बात तो बहुत सूक्ष्म, बापू! भाई! आहाहा! समझ में आया?

निक्षेप.... परमात्मा की प्रतिमा वह तो निक्षेप है, फिर कहने में ऐसा आता है 'जिनप्रतिमा जिन सारखी।' जिन सारखी न? जिन नहीं न? निक्षेप है न? तो निक्षेप ज्ञेय का भेद है परन्तु निक्षेप ज्ञेय का भेद है, वह नय का विषय है। जिसे यथार्थ नय ज्ञान हुआ, उसे यथार्थ निक्षेप का विषय लागू पड़ता है परन्तु यहाँ भेद से चार का विचार करना, वह अभूतार्थ है — ऐसा बताते हैं। आहाहा! है? **नाम** (निक्षेप) **स्थापना, द्रव्य और भाव। वस्तु में जो गुण न हो उस गुण के नाम से (व्यवहार के लिए) वस्तु की संज्ञा करना....** भगवान (— ऐसा) शरीर को नाम देना। **सो नाम निक्षेप है।** भगवान तो है नहीं। समझ में आया? पार्श्व, आते हैं न? वर्धमान पार्श्व नाम आता है न? वर्धमान पार्श्व। वर्धमान चौबीसवें तीर्थंकर का नाम है, पार्श्व तेईसवें का नाम है तो यह वर्धमान पार्श्व बन गया। है अन्दर में गुण? यह तो नाम निक्षेप से है, गुण न हो परन्तु नाम निक्षेप से कहा जाता है। उसका नाम 'नाम निक्षेप' (है) नहीं आता है या नहीं? हमारे बांकानेर में एक था पार्श्ववीर। हमारे बांकानेर में पार्श्ववीर नाम का एक लड़का था, वे दो नाम उसके — पार्श्व और वीर दो। वैसे यह वर्धमान शास्त्री हैं न? यह तो नाम निक्षेप है।

श्रोता : पण्डितजी के पुत्र का नाम परमात्मप्रकाश है न।

पूज्य गुरुदेवश्री : यह तो उसका नाम है न! उसके पुत्र का नाम है। पण्डितजी का बड़ा पुत्र है न यहाँ? उसका नाम परमात्मप्रकाश है, छोटे का नाम अध्यात्मप्रकाश है, होशियार है, दिमागवाला, परन्तु परमात्मप्रकाश तो नाम है। ठीक है! तो जिसे गुण न हो परन्तु उसके नाम से वस्तु की संज्ञा करना, वस्तु का नाम लेना, वह नामनिक्षेप है। आहाहा!

अब **स्थापना — 'यह वह है'** — यह भगवान है — ऐसा जो प्रतिमा में निक्षेप करना, यह स्थापना है। यह भगवान है, यह सरस्वती की वाणी है.... है तो पुस्तक ऐसा, सरस्वती की वाणी है — ऐसा कहना यह स्थापनानिक्षेप से है। समझ में आया? आहाहा! **इस प्रकार अन्य वस्तु में.....** अन्य वस्तु में **अन्य वस्तु का प्रतिनिधित्व स्थापित करना....** वस्तु तो अन्य है और भगवान अन्य है, तथापि भगवान का उसमें निक्षेप करना।

क्या है? फोड़ा है, किसका? आज रात हुआ है। भाई नहीं आये? गये? है? गये? रात्रि में गये? ठीक! यह गांगुली! होम्योपैथी का बड़ा, वह कलकत्ता में बड़ा डॉक्टर है, बाल ब्रह्मचारी है, विवाह नहीं किया है, फिर आया है। महाराज, आशीर्वाद दो कि अब आजीवन ब्रह्मचारी रहना है। विवाह करना ही नहीं। नहीं तो इतनी उम्र में भी कन्या तो बहुत देते हैं, लाखों की आमदनी है, होम्योपैथी का बड़ा (डॉक्टर है) परन्तु यहाँ आशीर्वाद दो महाराज कि हमें आजीवन विवाह नहीं करना है। कल नहीं आया भगवान की भक्ति में? दो सौ पचास, दो सौ इकयावन मण घी दिया, मण का ढाई रुपया, हों! अकबर के समय में मण का ढाई रुपया था, अकबर था न जब, अकबर बादशाह था, तब घी का (मूल्य) ढाई रुपया मण था। यह क्यों चला? यह बात सिद्ध की। अभी तो कितना ही कुछ है, सौ रुपये का मण, कितना कहा? ओहोहो! यह ढाई तो अकबर के समय में था। चार पैसे का शेर, घी, तो वह चलेगा।

श्रोता : उस समय चार पैसे महंगे थे।

पूज्य गुरुदेवश्री : उस समय चार पैसे महंगे थे, बात सत्य है, उस समय चार पैसे थे तो अभी एक रुपये के दो पैसे गिनने में आते हैं। एक रुपया के दो पैसे। आहाहा!

यहाँ कहते हैं कि निक्षेप में 'यह भगवान है' ऐसा कहना। यह प्रतिमा निक्षेप है, यह स्थापनानिक्षेप कहा।

द्रव्यनिक्षेप — वर्तमान से अन्य अर्थात् अतीत अथवा अनागत पर्याय से वस्तु को वर्तमान में कहना, सो द्रव्यनिक्षेप है। क्या? तीर्थंकर वर्तमान में नहीं हैं। श्रेणिक राजा (का) जन्म होता है तो तीर्थंकर कहना, वह भूतकाल की अपेक्षा से निक्षेप कहते हैं, तीर्थंकर तो तेरहवें गुणस्थान में होंगे, तब होगा। भविष्य में तीर्थंकर होनेवाले हैं,

उन्हें वर्तमान तीर्थंकर कहना, यह अतीत काल की, भूतकाल की अपेक्षा से कहना, वह द्रव्य-निक्षेप है। उसमें भविष्य की योग्यता है, इस अपेक्षा से गिनकर द्रव्यनिक्षेप से भविष्य में तीर्थंकर होनेवाले को वर्तमान तीर्थंकर कहना। समझ में आया? है? वर्तमान में कहना वह द्रव्य-निक्षेप है और **वर्तमान पर्याय से वस्तु को वर्तमान में कहना, सो भाव निक्षेप है।** यह केवलज्ञानी परमात्मा साक्षात् विराजमान हैं उनको भावनिक्षेप से कहना कि ये केवलज्ञानी हैं। हैं ऐसा कह देना, वह 'भावनिक्षेप' है। द्रव्य-निक्षेप में वर्तमान में है नहीं परन्तु भविष्य में होगा, अथवा भूतकाल में हो गया; मानो बड़ा सेठ था और फिर दीक्षित हुआ तो उसे सेठ कहना, यह भूतकाल की अपेक्षा से है। समझ में आया? और मुनि है, वह पहले सेठ था तो मुनि हुआ, उसे सेठ कहना, वह भूतकाल की अपेक्षा से है और केवलज्ञानी हुआ तो उसे मुनि कहना, आहाहा! भूतकाल की अपेक्षा से (है) और वर्तमान पर्याय में, भविष्य में होनेवाले को, भूतकाल में हो गये उनको वर्तमान में कहना, वह द्रव्यनिक्षेप है। ऐसी बात है। अब, इसमें कहीं फुर्सत नहीं। फुर्सत समझे? फुर्सत, आहाहा! भाई! जन्म-मरण से पिल रहा है तो ऐसा ज्ञान यथार्थ पहले व्यवहार ज्ञान भी करना पड़ेगा। यह अभी व्यवहार है। आहाहा! समझ में आया?

वर्तमान की पर्याय में वर्तमान कहना, वह भाव निक्षेप है। **ये चारों निक्षेपों का अपने-अपने लक्षण भेद से प्रत्येक का लक्षण भेद हुआ।** एक का नाम गुण नहीं और नाम कहना। एक को गुण है नहीं परन्तु सामने स्थापना करना। भगवान है, उसकी एक वर्तमान योग्यता को गिनकर भविष्य की पर्याय को उसकी कहकर भूतकाल की कहना और एक वर्तमान पर्याय को वर्तमान पर्यायरूप कहना। आहाहा!

भगवान का मार्ग, बापू! यह वस्तु का स्वरूप ही ऐसा है। भगवान ने कहीं किया है? कहा है, किया नहीं है। भगवान ने आत्मा को बनाया है? आहाहा! सर्वज्ञ भगवान ने तो जैसा है वैसा जाना और वाणी में ऐसा आया। आहाहा! यहाँ कहते हैं कि ये **चार निक्षेप हैं, वह लक्षण भेद से और उससे भिन्न-भिन्नरूप से अनुभव किया,** अनुभव अर्थात् ज्ञान किये जाने पर भूतार्थ है। अनुभव शब्द से यहाँ जानना लेना, चार के लक्षण भेद से, भेद करके जानना उसका नाम चार निक्षेप का ज्ञान है। **इसे जानने पर भूतार्थ है,** समझ

में आया ? वर्तमान, वर्तमान और भूत नाम, नाम आदि से कहना, वह सत्य है। है इतना, है इतना नाम भी सत्य है। नाम कहना है तो इस प्रकार से सत्य है या नहीं ? स्थापना भी सत्य है। इस प्रकार से कहना सत्य है, द्रव्य निक्षेप भूतकाल में भविष्य का कहना, वह भी सत्य है। इतना अपेक्षा से सत्य है। आहाहा!

और भिन्न लक्षण से रहित..... यह नाम स्थापना द्रव्य, भाव के भेद का लक्ष्य छोड़कर, आहाहा! **एक अपने चैतन्यलक्षणरूप....** एक अपने चैतन्यलक्षण — जानना -देखना उसका-भगवान का लक्षण, इस आत्मा का, **चैतन्यलक्षणरूप जीवस्वभाव का अनुभव करने पर....** इस जीव का स्वभाव चैतन्यलक्षण है। जानना-देखना यह उसका लक्षण है। कोई राग, पुण्य और दया-दान हो, वह उसका कोई लक्षण नहीं है। आहाहा! समझ में आया ? **एक चैतन्यलक्षणरूप जीवस्वभाव का अनुभव करने पर....** अनुभव अर्थात् वेदन, यहाँ अनुभव करने पर अर्थात् अनुभूति करने पर.... आहाहा! **वे चारों ही अभूतार्थ हैं,....** झूठे हैं, चार निक्षेप झूठे हैं। यह आता है न कलश में ? **उदयति न नयश्री रस्तमेति प्रमाणं** नय अस्त हो जाता है, प्रमाण अस्त हो जाता है, नय उदय नहीं होता, प्रमाण अस्त हो जाता है। निक्षेप कहाँ चला जाता है ? उसका हमें पता नहीं। आता है ? कलश में है। है न ? आहाहा! (कलश ९)

भगवान आत्मा अपने स्वरूपसन्मुख होकर अनुभव करे तब वह निक्षेप का भेद कहाँ चला जाता है हमें पता नहीं, कहते हैं। नय का उदय नहीं होता। आहाहा! प्रमाण तो अस्त हो जाता है। विकल्पात्मक प्रमाण (अस्त हो जाता है), निक्षेप कहाँ जाता है ? हमें पता नहीं, हमें तो अद्वैत का अकेला अनुभव है। अद्वैत अर्थात् वह अज्ञानी अद्वैत कहता है, वेदांती ऐसे नहीं, अद्वैत का अनुभव है, वह तो पर्याय है परन्तु अद्वैत / एकरूप चीज का अनुभव तो एकरूप तो चीज आयी और अनुभव की पर्याय भी आयी, दोनों आये। आहाहा! त्रिकाल चैतन्यस्वभाव का अनुभव, जो त्रिकाल चैतन्यस्वभाव भी आया, वह तो वस्तु और उसका अनुभव, वह पर्याय हुई। निर्विकल्प ज्ञान और निर्विकल्प दर्शन हुआ, वह पर्याय है। आहाहा! ऐसी बात है।

इस प्रकार..... है ? **जीवस्वभाव का अनुभव करने पर वे चारों ही अभूतार्थ**

हैं,... आहाहा! पहले कहे कि सच्चे हैं; फिर कहते हैं कि झूठे हैं। जो सच्चा है, कहने का (तात्पर्य यह) कि अस्तित्व है इतना, सच्चा ज्ञान है और सम्यग्ज्ञान है — ऐसा यहाँ नहीं। उसका अस्तित्व है परन्तु स्वभाव का अनुभव करने पर उनका अस्तित्व ही नहीं है। आहाहा! ऐसी बात है भाई! यह वाद-विवाद से तो पार पड़े ऐसी बात है नहीं। अन्तर अनुभव करने पर वह भान में आता है। आहाहा! वाद-विवाद करे तो कोई उससे (पार नहीं पड़ता) 'वाद-विवाद करे सो अन्धा' — समयसार नाटक में आया है। समझ में आया? आहाहा! और नियमसार में आया — भगवान कुन्दकुन्दाचार्य कहते हैं, प्रभु! तेरी चैतन्यनिधि का अनुभव हो — भेद से रहित (अनुभव हो) तो उस निधि को पाकर अकेला भोगना। जैसे परदेश गया प्राणी कोई करोड़ों रुपये लेकर अपने देश में आया तो वह गुप्त रीति से करोड़ों रुपये भोगेगा। बाहर बहुत प्रसिद्ध नहीं करेगा, ढिंढोरा पिटेगा कि हम करोड़ों रुपये लाये हैं तो कुटुम्ब के लोग, जाति-पातिवाले, भिखारी सब लाओ... लाओ... कहेंगे। नियमसार (गाथा १५७) में है। इसलिए परदेश में से कोई लाया हो करोड़-दो करोड़-पाँच करोड़.... ऐ हंसमुखभाई! है? इनके पिता के पास ५०-६० लाख.... रुपये हैं, बाईस लाख तो भरना पड़ा सरकार को, छह लड़के (सबके पास) पैसे अलग हैं। छह भाई हैं, तो इनके पास तो बहुत पैसा है। सबके — एक-एक के पास और इनके पिताजी अलग थे, उनके पास पैसा था, ५०-६० लाख, कहीं होगा पता नहीं, सरकार को २२ लाख भरना पड़ा था, उत्तराधिकार में अभी सरकार को। उसके पिता की लक्ष्मी, यह उत्तराधिकार रूप से आयी न? २२ लाख तो उसे सरकार को भरना पड़ा। अकेले उसके पिताजी की लक्ष्मी में से (भरना पड़ा)। अपने में से छह-छह लड़के हैं, उनके पास लक्ष्मी अलग-अलग — ऐसा सुना है। यह बैठा है, बड़ा है, उसका बड़ा भाई है छह में हंसमुख! यह तुम्हारे पास बैठा है। उन छह में कर्ता-हर्ता है, पाँच भाई इसे मानते हैं, बड़ा जो है, बड़े के रूप में। उसमें क्या आया धूल में? आहाहा!

यहाँ तो परमात्मा कहते हैं — एक बार सुन तो सही प्रभु! यह नय, निक्षेप, प्रमाण और नव तत्त्व का भेद, आहाहा! पहले ज्ञान करने में ज्ञान आता है परन्तु तुझे अनुभव करने में वह ज्ञान काम नहीं करता। आहाहा! क्या कहा? नव तत्त्व का ज्ञान, नय-निक्षेप का

ज्ञान, प्रमाण का ज्ञान, अन्तरदृष्टि में अनुभव करने पर वह बिल्कुल काम नहीं करता। आहाहा! ऐसा भगवान आत्मा पूर्णानन्द प्रभु के सन्मुख झुकने से जो आनन्द का अनुभव आता है, उसमें इस भेद की अपेक्षा है नहीं। इस अपेक्षा से भेद को झूठा कह दिया। आहाहा! एक बात।

अपना जो द्रव्य है न वस्तु! अपनी चीज है न द्रव्य, इस अपेक्षा से दूसरे द्रव्य को अद्रव्य कहते हैं। समझ में आया? यह क्या कहा?

श्रोता : बिल्कुल समझ में नहीं आया।

पूज्य गुरुदेवश्री : नहीं समझ में आया तो स्पष्टीकरण करते हैं। भगवान के शास्त्र में ऐसी चौभंगी ली है कि अपना द्रव्य जो वस्तु है, वह अपना द्रव्य अपने से है परन्तु अपने द्रव्य की अपेक्षा से भगवान का द्रव्य और दूसरे अन्य द्रव्य वे अद्रव्य हैं। इस द्रव्य की अपेक्षा से दूसरे द्रव्य अद्रव्य हैं, उसकी अपेक्षा द्रव्य हैं। युगलजी! आहाहा! अपने असंख्य प्रदेशी क्षेत्र से, स्वक्षेत्ररूप आत्मा है — इस अपेक्षा से दूसरा जो क्षेत्र असंख्य प्रदेशी जीव का है, वह अक्षेत्र है और अपना जो त्रिकाली आत्मा है और वर्तमान पर्याय है, इस अपेक्षा से स्वकाल में अपनी अस्ति है, और अपने स्वकाल की अपेक्षा से परद्रव्य की पर्याय का काल है, वह अकाल है। आहाहा! ऐसा कहाँ लोगों को (सुनने मिले) और अपना भाव त्रिकाली-अनन्त ज्ञान-दर्शन आदि भाव से अपना भाव है, अपने भाव की अपेक्षा से सब दूसरे द्रव्यों को जो भाव है, वह अभाव है। समझ में आया? ऐसे यहाँ नव तत्त्व की पर्याय, भेद निक्षेप, नय, प्रमाण का भेद, अपने त्रिकाली द्रव्य की अपेक्षा से झूठा है। पर तो अद्रव्य, अक्षेत्र, अकाल और अभाव है। आहाहा! भाई! प्रभु का मार्ग बहुत सूक्ष्म है! आहाहा! सप्तभंगी चलती है न! तो अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से अपनी अस्ति है और अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अपेक्षा से परवस्तु की नास्ति है — अद्रव्य, अक्षेत्र, अकाल, अभाव है। आहाहा!

इस प्रकार यहाँ पर्याय में नव तत्त्व का भेद, नय-निक्षेप का भेद, प्रमाण का भेद, वह है उसकी अपेक्षा से; जैसे अपनी अपेक्षा से दूसरा अद्रव्य है और उसकी अपेक्षा से द्रव्य है; वैसे पर्याय में यहाँ यह चार बोल आये हैं तो उसकी अपेक्षा से वे हैं परन्तु अन्तर अनुभव करने से स्वद्रव्य का अनुभव करने से वे नहीं हैं। आहाहा! ऐसी बातें अब!

श्रोता : इसमें धर्म कहाँ हो गया ?

पूज्य गुरुदेवश्री : यह धर्म हुआ। अन्तर आनन्द के नाथ का अनुभव करने पर जो आनन्द-वेदन आया और ज्ञान सम्यक् हुआ तथा वीर्य ने जो अपनी अनन्त शक्ति की पर्याय की रचना की, वह धर्म है। आहाहा! ऐसी बातें! फिर लोग कहते हैं न सोनगढ़वाले निश्चय एकान्ती हैं....! कहो भाई! तुम्हें रुचे वैसा कहो।

श्रोता : सब लोग प्रसन्न रहें ऐसा कहना चाहिए।

पूज्य गुरुदेवश्री : सब लोग प्रसन्न रहें या आत्मा प्रसन्न रहे ?

श्रोता : दुनिया में कोई वस्तु ऐसी नहीं कि सब प्रसन्न रहें।

पूज्य गुरुदेवश्री : उसमें — मोक्षमार्गप्रकाशक में लिखा है कि कोई ऐसी चीज नहीं है कि सबको पसन्द हो। सत्य बात कहने पर वह असत्यवाले को तो दुःख होगा तो उसमें क्या है। आहाहा! मोक्षमार्गप्रकाशक में तो बहुत स्पष्ट किया है। टोडरमल (जी) हैं।

यह तुम्हारे ऊपर आक्षेप है, पता है ? कि तुम टोडरमलजी का सब मानते हो, तुमने उनके लिए चलाया तो मैं कहता हूँ वह तुम नहीं मानते ? आया है समाचार पत्र में। आया है ? है ? ऐसा आया है, यह कि टोडरमल स्मारक में टोडरमल के अनुसार हम मानते हैं, हम ऐसा कहते हैं हुकमचन्दजी, हमारे साथ चर्चा करें, उस अनुसार मानते नहीं — ऐसा आया है। इसमें आया है। आहाहा! पता है न, हम तो मोक्षमार्गप्रकाशक को ८२ की साल से पढ़ते थे, ८२ - ५२ वर्ष हुए। समयसार ७८ से — ५६ वर्ष हुए। एक-एक अक्षर और एक-एक शब्द को भिन्न-भिन्न करके, उसका क्या न्याय है-शोध कर लिया है। आहाहा! उसमें लेख आया था, वह तुम्हारे प्रति कि तुम स्मारक, टोडरमल स्मारक करके टोडरमल को मानते हो तो टोडरमल ने लिखा है तद्नुसार तुम नहीं मानते, तुम्हारी श्रद्धा में फर्क है ऐसा। कहाँ गये रतनचन्दजी ? तुम्हारे भाई के ऊपर ऐसा आक्षेप आया है। न समझे, न जँचे उसे तो क्या काम का ? आहाहा! टोडरमलजी ने तो यथार्थ कहा है परन्तु समझे उसको न ? परन्तु किसी समय ऐसा लिखा, उसमें कि भाई! जो यहाँ राग की मन्दता करते-करते करे और भविष्य में कोई निमित्त ऐसा मिल जाये तो कदाचित् पाये — ऐसा भी लिखा है परन्तु वह तो व्यवहार का कथन है, पता है। समझ में आया ? आहाहा! ऐसा कि उन लोगों ने

यह भूल निकाली है.... हमको तो सारे मोक्षमार्ग (प्रकाशक) की खबर है। आहाहा! अरे प्रभु! यहाँ तो जहाँ नय, निक्षेप, प्रमाण और नौ तत्त्व के भेद को भी स्वभाव का अन्तर-अनुभव करने पर झूठा कहते हैं तो तुम्हें किस बात को सच्चा स्थापित करना। दया, दान, व्रत, और राग वह तो झूठा है। स्वभाव के अनुभव की अपेक्षा से (झूठा है) और नहीं तो वह झूठा है। अन्तर आनन्द को प्राप्त कराने के लिये झूठी चीज है। जैसे यह भेद नव तत्त्व, नय, निक्षेप की पर्याय अनुभव करनेवाले को झूठा है, तदुपरान्त व्यवहार रत्नत्रय है, वह निश्चय पाने के लिए झूठा है। आहाहा! बाबूभाई! ऐसी बात है भाई! यह मानो अथवा रुचे वह मानो, वस्तु तो यह है। समझ में आया?

यह यहाँ कहते हैं — **एक जीव ही प्रकाशमान है।** आहाहा! है? नव तत्त्व में, प्रमाण के भेद में, नय के भेद में और निक्षेप के भेद में एकरूप चैतन्य प्रकाशमान नहीं होता। वे तो अनेकरूप से भिन्न-भिन्न भासित होते हैं परन्तु भगवान आत्मा एकरूप चैतन्यप्रकाश का पुंज प्रभु है, उस सन्मुख का अनुभव करने पर वह पर्याय में था — ऐसा कहा था परन्तु अनुभव करने पर वे झूठे हैं। विशेष कहेंगे।

(**श्रोता :** प्रमाण वचन गुरुदेव!)